भारत के राष्ट्रपति

राजेन्द्र प्रसाद

द्वारा दिये गये

महत्वपूर्ण सन्देश

जनवरी १९५०—अप्रैल १९५२।

सुपरिनटेनडेन्ट, प्रेसिडेन्ट प्रैस द्वारा मुद्रित।

१६५०

नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ समिति को सन्देश।

(२८-१-५०)

पंडित जवाहरलाल नेहरू के साठवें जन्म दिन पर यह अभिनन्दन ग्रन्थ दिया जा रहा है। इसकी तैयारी में बहुतेरे देश और विदेश के प्रतिष्ठित और प्रमुख लोगों ने भाग लिया है और उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि दी है। जवाहरलाल जी का जीवन देश और संसार के सामने भारत की आज़ादी की लड़ाई के साथ और उसके समाप्त होने के बाद यहां के शासन के साथ, इस तरह से प्रायः तीस पैंतीस वर्षों से, जुटा रहा है कि देश का इतिहास ही उनकी जीवनी है अथवा उनकी जीवनी ही देश का इतिहास है। लाहौर कांग्रेस में १६२६ के दिसम्बर में उनको सभापति का पद सौंपते समय पूज्य पंडित मोतीलाल जी ने जो उस समय सभापति थे बड़े मार्मिक शब्दों में फ़ारसी की कहावत कही थी जो पिता नहीं कर पाता उसे पुत्र पूरा करता है और यह कह कर उन्होंने स्वराज्य सम्बन्धी जो उस समय बृटिश गवर्नमैंट के साथ सत्याग्रह छिड़नेवाला था और जिसकी तैयारियां वायुमंडल में आदमी चारों ओर अनुभव कर सकता था उसका सारा भार उनको सौंप दिया। पुत्र ने उसको ग्रहण किया, सम्भाला और पूरा किया। आज साठवें वर्ष गांठ के अवसर पर जो पूर्ण स्वतन्त्रता की शपथ रावी के किनारे ली गई थी वह पूरी हुई। कार्य रूप से तो ढाई वर्ष पहले ही पूरी हो चुकी थी पर आज बाजाप्ते और कानूनी तौर पर भी पूरी हो गई। आज भारत का शासन, प्रतिष्ठा और आशाएं सभी उनके ही हाथों में हैं और सुरक्षित हैं। जिस साहस, विवेक और दृढ़ता के साथ वह देश को इस अवस्था पर पहुंचा चुके हैं वही अभी जो संकट और कठिनाइयां आवेंगी उनसे भी इसे बचाने में समर्थ होगी। यही सब की आशा और विश्वास है। जवाहरलाल जी को मेरी हार्दिक बधाई है।

अमृत बाज़ार पत्रिका के हिन्दी संस्करण के लिये सन्देश।

(१४-२-५०)

मुझे यह जानकर खुशी है कि देश के प्रख्यात, पुराने और लोकप्रिय पत्र अमृत बाज़ार पत्रिका का हिन्दी संस्करण जल्द ही प्रयाग से निकलने जा रहा है। यह पत्र आज प्राय: अस्सी वर्षों से पत्रकारिता के आदर्शों पर चलता हुआ देश की सेवा कर रहा है। अपने दीर्घ जीवन में इस पत्र ने बड़ी २ मुसीबतों का सामना किया है और सदा ही निर्भीकता पूर्वक लोकमत पर प्रकाश डाला है। राष्ट्रीयता को पनपाने का बहुत बड़ा श्रेय इस पत्र को प्राप्त है। भारतीय पत्र जगत में अमृत बाज़ार पत्रिका एवं उसके प्रतिष्ठापक निर्भीक पत्रकार स्वर्गीय शिशिरकुमार घोष और श्री मोतीलाल घोष को लोग सदा आदर से याद करेंगे। आज जब हिन्दी शीघ्र ही राष्ट्र या राज्य भाषा का रूप ग्रहण करने जा रही है पत्रिका के संचालकों का उसका हिन्दी संस्करण निकालने का निर्णय निश्चय ही पत्र की परम्परा के सर्वथा अनुकूल है। 'आशा है पत्र का हिन्दी संस्करण समय के अनुरूप होगा और हिन्दी जगत इसका समुचित स्वागत करेगा।

अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महासम्मेलन को उसके ३१वें अधिवेशन के अवसर पर सन्देश।

(१४-२-५०)

आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली इस देश की अपनी चीज़ है। हमारे प्राचीन मनीषियों ने इस पर शास्त्रीय ढंग से गम्भीर गवेषणा करके इस प्रणाली को सफलता की चरम सीमा तक पहुंचाया था। सस्ती होने के साथ ही यह पद्धति रोग के मूल कारण को दूर करके रोगी को स्थायी रूप से निरोग करती है। बनस्पति की खोज, उसकी समुन्नति और औषधि निर्माण की शास्त्रीय व्यवस्था इन सभी बातों पर हमारे आयुर्वेद विशारदों का अब पूरा ध्यान जाना चाहिये जिससे कि यह प्रणाली फिर अपनी पुरानी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके और देश शरीर और बुद्धि से स्वस्थ और सबल हो सके। औषधि निर्माण

में एक रूपता लाना बहुत आवश्यक है ताकि जनता को कहीं भी प्रामाणिक आयुर्वेदिक औषधि मिल सके। आज की वैज्ञानिक खोज की पद्धति से आयुर्वेद भी अपने को अलग नहीं रख सकता है। इस में शास्त्रियों को दिलचस्पी लेनी चाहिये और यथासाध्य आधुनिक और प्राचीन पद्धतियों में सामंजस्य लाने का प्रयत्न करना चाहिये।

स्वामी भवानी दयाल सन्यासी, प्रवासी कार्यालय अजमेर को सन्देश।

(२४-२-५०)

प्रिय भवानी दयाल जी,

प्रवासी सम्बन्धी आपका तार मिला तथा पत्र भी। प्रवासी पत्र ने आपके सम्पादकत्व में प्रवासी भारतियों के हित के रक्षणार्थ जो सेवायें की हैं, वे भारतवासियों को सदा याद रहेंगी। उनके लिये मेरा यही सन्देश है कि विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त पर चल कर राष्ट्रपिता के बताये सत्य अहिंसा के पथ को अपनायें। इस में ही उनका और भारत के लोकतन्त्र का गौरव है।

प्रवासी अपने उद्देश्य में सफल हो, उसके लिये यही मेरी शुभकामना है।

श्री राधारमण जी को गान्धी मण्डप प्रदर्शनी के अवसर पर सन्देश।

(२४-२-५०)

प्रिय श्री राधारमण जी,

अखिल भारतीय उद्योग प्रदर्शनी के स्टालों को घूमकर देखने का आज दोपहर को मुझे मौका मिला और उन्हें देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। आपने और आपके सहकर्मियों ने प्रदर्शनी को सार्थक बनाने के लिये जो परिश्रम किया है उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। प्रदर्शनी स्थित विभिन्न दुकानों को मुझे दिखलाने का आपने जो कष्ट उठाया और इस तरह

कला और कौशल की कई बहुत ही सुन्दर वस्तुओं को, जो कि हमारे यहां के प्राचीन गृहउद्योग की चीजें थीं, देखने का मौका दिया उसके लिये भी मैं आपका आभारी हूं। जैसा कि अक्सर मैंने कहा है गृहोद्योग का भविष्य बड़ा ही समुज्जवल है। देश भर में ऐसी स्थायी या सामयिक प्रदर्शिनियों के आयोजन की बड़ी जरूरत है और उनका बड़ा महत्व है। इस बात के लिये मैं जितना भी ज़ोर दूं वह कम है।

इतनी बड़ी संख्या में स्त्री, पुरुष और बच्चे प्रदर्शनी देखने आते हैं यह इसकी सर्वप्रियता का पर्याप्त प्रमाण है। प्रदर्शनी के आयोजकों और यहां अपने वस्तुजात लाने वाले व्यक्तियों की मैं सफलता चाहता हूं।

अखिल भारतीय ताड़गुड़ सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन को संदेश।

(१०-३-५०)

प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि ताड़ गुड़ मामूली चीनी से कहीं अधिक पौष्टिक होता है। इस ओर सब से पहले गांधी जी ने लोगों की दृष्टि खींची थी। इसको जनता तक पहुंचाने का काम आप कार्यकर्त्ताओं का रहा है। मुझे विश्वास है कि आप सबलोगों के सतत प्रयत्न से जनता की दिलचस्पी इस बारे में बढ़ेगी और वह इस धन का सदुपयोग करने लगेगी।

मैं सम्मेलन के प्रतिनिधियों से यही कहूंगा कि वे जिस काम में लगे हुए हैं वह बड़े राष्ट्रीय महत्व का है। सचमुच वे देश की समृद्धि के लिये प्रयत्नशील हैं और उनकी सफलता से देश को अत्यन्त लाभ होगा, और विशेषकर यहां के किसानों और मज़दूरों का लाभ तो कहीं अधिक होगा।

संजीवन को सन्देश।

(१७-३-५०)

मद्यनिषेध महात्मा गान्धी के द्वारा चित्रित नव समाज की आधारभूत शिला था। हर्ष का विषय है कि मुम्बई राज्यकी सरकार पूर्ण मद्यनिषेध की नीति पर कार्य करके इस समाज की स्थापना की ओर अग्रसर हो रही है।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि उस नीति के कारण उस राज्य के मजदूरों और कृषकों का अन्ततोगत्वा बड़ा भारी लाभ होगा। मेरी उत्कृष्ट इच्छा है कि उस राज्य की सरकार को इस दिशा में पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

बुद्ध जयन्ती के उपलक्ष में धर्मदूत को सन्देश।

(२५-३-५०)

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि बुद्ध जयन्ती के पुनीत अवसर पर बौद्धमत सम्बन्धी एकमात्र हिन्दी मासिक धर्मदूत का विशेषांक निकलने जा रहा है। बुद्ध भगवान के उपदेशों पर निष्ठा से अमल करने वाले थोड़े लोग भी आज के अशान्त दुःखी संसार को प्रशान्त और सुखी बनाने में बहुत कुछ कामयाब हो सकते हैं। इस पुनीत अवसर से संसार के और खास कर भारत के बौद्ध मतानुयाइयों को यही प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिये कि वे अपने आचरण द्वारा अपने अन्य मतानुयायी बन्धुओं तथा दूसरों को मानव कल्याण के लिये अनुप्राणित करें।

केन्द्रीय गोशाला विकास मंडल को सन्देश।

(१५-४-५०)

यह सर्वमान्य तथ्य है कि प्रत्येक देश की और विशेषतया कृषिप्रधान देश की स्मृद्धि और स्वास्थ के लिये ढोरों का बड़ा महत्व होता है। यह हम लोगों के लिये दुर्भाग्य की बात रही है कि अभी तक इसकी उन्नति और रक्षा के लिये विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका। इस दिशा में जो कुछ भी काम किया गया वह उदार और धर्मभीरू हिन्दुओं द्वारा जिन्हों ने देश में स्थान स्थान में गोशालायें इसलिये स्थापित कीं कि उन में गउओं का लालन-पालन हो सके। किन्तु यह संस्थायें कुशल कर्मचारियों के अभाव और बद-इन्तज़ामी के कारण गउओं की कुछ अधिक सेवा न कर सकीं जिसका यह दुखद परिणाम है कि इस बात के बावजूद भी कि हमारे देश के अधिक लोग गऊ को माता की तरह पूजते हैं तथा हमारे देश में संसार भर से गउओं की संख्या अधिक रही किन्तु हमारी जनता के प्रति व्यक्ति को दूसरे देशों के मुकाबले में दूध सब से कम मिलता है। इस दुर्भाग्य से हमें छुटकारा तभी

मिल सकता है जब कि हम गऊ सेवा में लगी हुई सब संस्थाओं का आपस में गठबन्धन कर दें और उनकी कार्यवाइयों में समन्वय पैदा कर दें। इस दिशा में आरम्भिक कदम कुछ वर्ष हुए उठाये गये थे। इस प्रयोजन के लिये सरकार ने अब केन्द्रीय गोशाला प्रबन्धिका की स्थापना की है। मुझे पूरा भरोसा है कि सरदार दातारसिंह की इस दक्ष सहायता से वह ढोरों की नस्ल सुधारने, दूध की मात्रा बढ़ाने और गाय की सुचारू सेवा की दिशा में आगे कदम उठायेगी। हमारा सर्वदा यह स्वप्न रहा है कि हमारे देश में दूध और दही की नदियां पुनः बहने लगें और मैं समझता हूं कि प्रबन्धिका इस स्वप्न को सत्य सिद्ध करने में महत्वपूर्ण कार्य करेगी।

हज़रत अमीर ख़ुसरो की सालाना उर्स के अवसर पर सन्देश।

(१-८-५०)

हजरत अमीर खुसरो भारत के उन बुजुर्गों में से थे जो अपनी छाप उसकी तवारीख पर छोड़ गये है। वह महज़ फ़ारसी और तुरकी के ही शायर और आलिम न थे बल्कि उन्हों ने अपने नये वतन भारत की प्यारी हिन्दवी ज़बान में भी ऐसी महारत हासिल कर ली थी जैसी कि शायद ही और कोई कर सका हो। उनको भारत के नदी पहाड़, फलफूलों से अज़हद मुहब्बत थी और हिन्दवी तो उनको इतनी प्यारी थी कि उस ज़माने में भी उन्होंने अपनी शायरी में उसको फ़ारसी के साथ बराबर का दर्जा दिया और अक्सर अपने अशारों मे अगर एक मिसरा फ़ारसी का लिखा तो दूसरा हिन्दवी का। उनकी लिखी हुई पहेलियां तो इतनी दिलचस्प हैं कि आज भी हमारे मुल्क के पढ़े-बेपढ़े, बुड्ढे और बच्चे उनको बड़े चाव से बूझते हैं।

एक लिहाज़ से हज़रत अमीर खुसरो ने इस मुल्क के बाशिन्दों को यह रास्ता दिखाया कि वे इसके लिये ही जियें और मरें और इसकी ज़बान और रहन-सहन को अपना कर आपस में ऐसे रल मिल जायें कि किसी को यह मुतलक अहसास न हो कि उनमें किसी तरह के तफ़रूक्कात हैं।

उनकी उर्स के दिन मैं उनको अपना ख़िराजे-अदब पेश करता हूं और उम्मीद करता हूं कि उनकी याद हमारे दिलों में मेल मिलाप और भाईचारे की गंगा बहा देगी।

स्वतन्त्रता जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रपति का राष्ट्र के नाम सन्देश।

(१५-६-५०)

अपनी स्वतन्त्रता का तीसरा वार्षिकोत्सव मनाते समय हमें यह स्मरण रखना है कि स्वतन्त्रता ने जो ज़िम्मेदारियां हमारे ऊपर रखी थीं उनको पूरा करने के लिये अभी हमें काफी रास्ता तय करना है। हम इसे सफलता और शीघ्रता से तभी तय कर सकेंगे जब कि पूरा राष्ट्र यह बात अच्छी तरह समझ ले कि उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करना केवल राज का काम न होकर उसका अपना भी काम है। क्यों कि पिछली कुछ शताब्दियों में राज्य विदेशियों के हाथ में था इसलिये राष्ट्र और राज्य के बीच में खाई बन गयी थी और राज्य के प्रति यह भावना और पैदा हो गयी थी कि यह एक बुराई है जिसे मजबूरी सहना है किन्तु उसकी सहायता नहीं करनी है। कुछ क्षेत्रों में यह विचार और दृष्टिकोण आज भी पाया जाता है। किन्तु यदि हमें प्रगति करनी है तो यह विचार दूर होना चाहिये। आज तो राज्य राष्ट्र का और राष्ट्र के लिये है। दूसरे शब्दों में राज्य और राष्ट्र के बीच की वर्तमान मानसिक खाई पट जानी चाहिये। जनता के हृदय में अपने द्वारा स्थापित किये हुए लोकतन्त्रात्मक गणराज्य के प्रति गर्व होना चाहिये। भारत की भलाई के लिये किसी भी प्रोग्राम को कोई आवश्यक क्यों न समझे, पर हर ऐसे काम को जो गणतन्त्र को दुर्बल या खंड खंड करने की संभावना रखता हो उसे देश के प्रति द्रोह समझना चाहिये। हमारे संविधान ने वयस्क मताधिकार द्वारा भारत के प्रति व्यक्ति को इस बात का अवसर प्रदान किया है कि वह भारत के शासन में, उसकी नीति निर्धारण में और उसके भविष्य निर्माण में भाग ले सके। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि प्रत्येक सही शिकायत को दूर करने के लिये संविधान के अनुसार वैधानिक कारवाई करने की सब के लिये सहूलियतें मौजूद हैं और यह आशा की जा सकती है कि इन सुविधाओं से जनता पूरा पूरा लाभ उठायेगी तथा गणतन्त्र या उसके नागरिकों में से किसी विभाग के विरुद्ध सब प्रकार के हिंसात्मक साधनों का प्रयोग बुरा समझेगी और उनका विरोध करेगी। जनता को चाहिये कि राज्य को अपनी सारी शक्ति और साधनों का सहारा दे जिससे वह अपना कर्तव्य सफलता पूर्वक कर सके। राज्य को अपने सभी नागरिकों की सद्भावना और देशभक्ति की स्फूर्ति अपेक्षित है

और नागरिकों का धर्म है कि वह इस कर्तव्य को समझें और उसका पालन करें।

दूसरी बात जिसके ऊपर ज़ोर देना आज आवश्यक है वह यह है कि हमारा राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है जब हम सचाई के रास्ते और नैतिक धर्म पर दृढ़ बने रहें। हमारे समाज में जो बहुत प्रकार की खराबियां मौजूद हैं वह सब नीच स्वार्थपरायणता के कारण ही हैं, और यह स्वार्थपरायणता असंख्य प्रकारों में प्रकट हो रही है। हमें इससे लड़ना है और मिटा देना है तथा आपसी व्यवहार के माकूल स्तर कायम करने हैं और उन्हें व्यावहारिक रूप से अपनाना है। चाहे यह स्वार्थपरता ऐसे शोषण का रूप अख्तयार करे जिसमें वह आसानी से दिखाई नहीं देती अथवा कितनी ही छोटी या बड़ी मात्रा में चोर बाज़ारी, रिश्वतखोरी और अन्य प्रकार के भ्रष्टाचार के रूप में वह व्यक्त हो अथवा जातिगत भेदभाव, साम्प्रदायिक्ता अथवा प्रान्तीयता का रूप धारण करती हो इसे हर हालत में नीच स्वार्थपरता मानना चाहिये, और दूर करना चाहिये। मेरे मन में लेश मात्र भी शंका नहीं है कि हमारी जनता जिसे इतिहास से महान संस्कृति की विरासत मिली है और जो असीम नैतिक और आत्मिक साधनों की अधिकारिणी है, अपने इस आन्तरिक शत्रु पर विजय पायेगी। और ऐसा भारत निर्माण करेगी, जिसके लिये सब गर्व कर सकें।

श्री भारतेन्दु जन्म शती के अवसर पर सन्देश।

(१६-६-५०)

भारतेन्दु जी भारत की उन विभूतियों में से थे जिन्हों ने देश की सांस्कृतिक पुनर्जाग्रति के यज्ञ को प्रारम्भ किया था, और उसके द्वारा देश में एक नव जीवन और नई स्फूर्ति की लहर चला दी थी। अतः हर्ष की बात है कि आज हम उनकी शताब्दी मना रहे हैं। उनके प्रति हम अपनी कृतज्ञता तभी प्रगट कर सकेंगे जब कि हम हिन्दी को इतना उन्नत और समृद्ध बना दें कि वह भारत की राजभाषा का स्थान पूरे गौरव से भर सके।

बाल निकेतन को सन्देश।

(२०-६-५०)

मुझे इस बात से प्रसन्नता हुई है कि बालनिकेतन-भवन बन कर तैयार हो गया है। उसका यह सौभाग्य है कि उसका उद्घाटन सरदार वल्लभ भाई पटेल के कर कमलों से हो रहा है, और मेरी कामना है कि वह बालशिक्षण का आदर्श केन्द्र बने।

कस्तूरबा ग्राम के शिलान्यास के अवसर पर सन्देश।

(३०-६-५०)

यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि भाई सरदार वल्लभ भाई पटेल के द्वारा कस्तूरबा ग्राम का शिलान्यास किया जा रहा है। बापू का यह स्थिर मत था कि सच्ची लोकतन्त्रीय समाज की नींव हमारे ग्राम ही हो सकते हैं और इस लिये हमारी सामाजिक क्रान्ति का सब से महत्वपूर्ण अंग हमारे यहां के ग्रामों का पुनरुद्धार है जिसके लिये अनेक ग्राम सेवक और सेविकाओं की आवश्यकता होगी। मेरा पूरा विश्वास है कि कस्तूरबा ग्राम इस ध्येय की पूर्ति में महान काम करेगा और व्यवस्थानुसार अनेक ग्राम सेविकाओं को उचित शिक्षा और प्रशिक्षा देकर ग्रामों के उद्धार कार्य में लगा देगा। यह तो सब जानते ही हैं कि हमारे ग्राम शताब्दियों तक शासन द्वारा उपेक्षित रहे हैं और इस कारण उनकी सांस्कृतिक और आर्थिक अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई जिसके फलस्वरूप न केवल वे स्वयं ही पीड़ा ग्रस्त हुये वरन् सारे देश पर भी विपदा छा गई। हमारा धर्म है कि अब अविलम्ब उनकी संस्कृति, आर्थिक स्थिति और व्यवस्था को सुधारें। इस महान यज्ञ की पर्ति में कस्तूरबा ट्रस्ट का बड़ा हाथ है और रहेगा और मेरी यह आशा है कि उसके प्रयास के फलस्वरूप हमारे ग्राम पुनः संस्कृति, सुख और समृद्धि के केन्द्र हो जायेंगे।

दिल्ली पिंजरापोल सोसाइटी के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर सन्देश।

(१५-११-५०)

भारत जैसे कृषिप्रधान देश के लिये ढोरों और विशेषतः गाय के महत्व पर कितना ही बल क्यों न दिया जाये वह अधिक न होगा। इसी सचाई के पहचानने के कारण ही हमारे पूर्वज गाय को मातासम पूजते थे। इस धन की रक्षा के लिये हम जो कुछ भो कर सकते हैं हमें करते रहना चाहिये, किन्तु साथ ही हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि गाय की हम कुछ ज्यादा सेवा तब तक नहीं कर सकते जब तक कि हम उस ज्ञान से लाभ नहीं उठाते जो आधुनिक विज्ञान ने हमें दे दिया है।

मैं यह चाहता हूं कि खास तौर से गोशालाएं अपने सेवा ध्येय को पूरा करने के लिये आधुनिक विज्ञान का पूरा पूरा लाभ उठायें और मुझे आशा है कि देहली पिजंरापोल सोसाइटी इस बारे में पथ प्रदर्शक बनेगी।

मेरी सद्भावना है कि वह अपने सेवाधर्म को सफलता पूर्वक पूरा करे।

बनस्थली विद्यापीठ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर राष्ट्रपति का सन्देश।

(२०-११-५०)

बनस्थली बालिका विद्यालय हमारे यहां के बालिकाओं को भारतीय संस्कृति और सादगी से ओत-प्रोत वातावरण में शिक्षा प्रदान करके उनकी महती सेवा करता रहा है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह सफलता पूर्वक यह सेवा सदा करता रहे।

राजस्थान विश्वविद्यालय के समावर्तन समारोह के अवसर पर सन्देश।

(७-१२-५०)

राजस्थान यूनीवर्सिटी अभी केवल तीन वर्ष की है। पर इतने ही दिनों में प्रायः सभी विषय इस के किसी न किसी कालिज में पढ़ाये जाते हैं। इस का नया विधान बना है और आशा की जाती है कि इस की दिन प्रति दिन उन्नति होगी। तभी इसे इस सद् प्रयत्न में सफलता मिलेगी।

आज भारत के सभी प्रदेशों और राज्यों में यूनीवर्सिटियां बन गई हैं और कुछ प्रान्तों में तो एक से अधिक बन गई हैं। हमारे प्रान्तों में कुछ न कुछ विशेषता और विभिन्नता तो है ही। इन विशेषताओं के कारण बहुत कर के उन का स्वतन्त्र अस्तित्व भी है। इन यूनीवर्सिटियों का कर्तव्य होना चाहिये कि उन विशेष विशेषताओं का अध्ययन करें और वहां बहुमुखी शिक्षा, जो सब प्रान्तों के लिये आवश्यक है, देती रहें। वहां विशेषताओं का पर्याप्त ज्ञान अपने विद्यार्थियों को देवें और सारे देश के लिये उपलब्ध कर दें। उदाहरणार्थ राजस्थान का इतिहास ले लिया जाये। इस का गौरव पूर्ण इतिहास है और भिन्न २ राज्यों के अपने २ इतिहास रहे हैं। इस में अभी न पर्याप्त खोज हुई है और न जहां तक मैं जानता हूं उपलब्ध सामग्रियों का उचित उपयोग ही हुआ है। जो राज्य राजस्थान में सम्मिलित हो गये हैं मैं समझता हूं कि प्रत्येक के राजभवन में बहुत कुछ सामग्रियां मौजूद हैं जो सच्चे विद्याविलासी अन्वेषकों की बाट जोह रही हैं। यहां के ग्राम गीतों में भी इतिहास भरा पड़ा है। राजस्थान यूनीवर्सिटी का यह कर्तव्य और गौरव होना चाहिये कि इस महान कार्य में इस के आचार्य और विद्यार्थी लग जायें और इस महत्वपूर्ण इतिहास को सारे भारत के लिये उपलब्ध और सुरक्षित बना दें। मैं चाहूंगा कि युनीवर्सिटी में पुरातत्व विभाग की केवल स्थापना ही न की जाय उसे योग्य प्रोत्साहन भी दिया जाय। मैं आशा करता हूं कि राजस्थान युनीवर्सिटी का ध्यान इस ओर जायेगा।

१९५१

नागपुर की मेहतर कोआपरेटिव सोसायटी की स्थापना के अवसर पर सन्देश।

(२४-१-५१)

यह सुन्दर विचार है कि मेहतरों की सहकारी संस्था स्थापित की जा रही है, जिससे कि वे कचड़े को खाद में परिवर्तन करने के कार्य द्वारा देश के कल्याण में रचनात्मक अंश दान कर सकेंगे और साथ ही अपनी आर्थिक अवस्था में, कितनी ही कम मात्रा में क्यों न हो, सुधार कर सकेंगे। इस संस्था की सफलता के लिये मेरी पूरी सद्कामनायें हैं।

सर्वोदय समाज के नाम सन्देश।

(२७-१-५१)

हमारी राजनैतिक क्रान्ति का ध्येय यही था कि हमारी आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति ऐसी हो जाये जिसमें हर एक मानव को अपने जीवन की अभिव्यक्ति और विकास का पूरा पूरा अवसर प्राप्त हो। वह पूर्ण रूपेण अहिंसा सिद्धान्त के आधार पर ही हो सकती है।

वह ध्येय अभी प्राप्त करना है और सर्वोदय समाज इस बारे में बहुत ही सफलता से हमारा नेतृत्व करसकता है।

समाज में अज्ञान और द्वेष वश जो संघर्ष होता है उससे व्यर्थ में ही मानव की महान हानि होती है। सब को एक प्रेमसूत्र में बांध कर उन्नति पथ पर चलने का काम सर्वोदय समाज के ही द्वारा हो सकता है। मेरी सद्कामना है कि सर्वोदय पखवारे में समाज को नव स्फूर्ति और उत्साह मिले और वह दृढ़ता से हमारा सक्रिय पथ प्रदर्शन करे।

सुहृद संघ को सन्देश।

हिन्दी के भारत संघ की राजभाषा हो जाने के पश्चात् हिन्दी साहित्यिकों का उत्तरदायित्व अत्यन्त बढ़ गया है और अब उनके लिये यह उचित है कि वे हिन्दी के साहित्यिक भण्डार को हर दृष्टि से समृद्ध बनायें। मैं समझता हूं कि सुहृद संघ का १७वां वार्षिकोत्सव साहित्यिकों को इस दिशा में कार्य करने के लिये पर्याप्त प्रोत्साहन प्रदान करेगा।

इस की सफलता के लिये मेरी शुभकामना है।

बच्चों की बिरादरी को सन्देश।

(६-२-५१)

यह एक मानी हुई बात है कि बच्चे बड़े होकर अपने घर का और देश का काम सम्हालते हैं, इसलिये उनको बचपन में ही ऐसी तालीम मिलनी चाहिये कि वह अपने सभी फर्ज़ों को समझ सकें और उनका आदर करने की

योग्यता पा लेवें। यह योग्यता सिर्फ दिमागी योग्यता नहीं है। इसमें तन्दुरुस्ती उतनी ही ज़रूरी है जितनी अच्छी तालीम। इसमें चरित्र का दुरुस्त होना और भी ज्यादा जरूरी है। जब तक इन तीनों पर पूरा ध्यान नहीं दिया जायगा बच्चों की शिक्षा अधूरी रहेगी। इसके लिये स्कूलों के अलावा बच्चों की बिरादरी जैसी दूसरी संस्थायें भी बहुत काम कर सकती हैं, खास कर के चरित्र गठन में।

मैं चाहता हूं कि यह संस्था तरक्की करे और अपने उद्देश्य की प्राप्ति में पूरी तरह सफल हो।

बच्चों की बिरादरी को मेरी यह दुआ है।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के नाम सन्देश।

(२४-२-५१)

प्रिय श्री आशा देवी जी,

आप के पत्र से यह जान कर प्रसन्नता हुई कि सेवाग्राम में बुनियादी तालीम के सम्बन्ध में सम्मेलन होने जा रहा है। बुनियादी तालीम महात्मा गान्धी जी के रचनात्मक कार्यक्रम में एक अत्यन्त ऊंचा स्थान रखती है और इस से महात्मा जी बहुत आशाएं रखते थे क्योंकि वह इस में कार्यक्रम के दूसरे कितने ही मदों को सम्मिलित कर लेना चाहते थे और इस के द्वारा भावी समाज रचना में बड़ी मदद की आशा रखते थे। पर यह खेद का विषय है कि इस पर इतना ध्यान नहीं दिया गया है जितना दिया जाना चाहिये। सेवाग्राम में छोटे पैमाने पर और बिहार में उस से कुछ बड़े पैमाने पर जो काम हुआ है उस से इस की उपयोगिता प्रमाणित हो गई है और अब समय आ गया है कि जब इसको बड़े पैमाने पर फैलाया जा सकता है। इसके विस्तार की केवल एक ही सीमा है और वह है सारा देश। पर विस्तार में कठिनाई और रुकावटें भी हैं। जिन में मुख्य योग्य शिक्षकों का अभाव है जो इस के सिद्धान्तों को समझें और उनको क्रियात्मक रूप दे सकें। जैसे जैसे और जिस अंश में यह कठिनाई दूर की गई है उसी अंश में बिहार में इसका प्रचार भी बढ़ा है। अब समय आ गया है जब इसका प्रयोग उच्च कोटि की शिक्षा में भी किया जाये। मैं समझता हूं कि आपका

सम्मेलन इसी विषय पर विचार करने के लिये हो रहा है। मेरे विचार से सबसे कठिन मंज़िल आप तय कर चुके हैं। अब उसी अनुभव की नींव पर आगे का कार्यक्रम भी बनावें, पर मुझे मालूम होता है कि वैज्ञानिक विषयों में तो आज की प्रचलित पद्धति में भी प्रयोग से बहुत काम लिया जाता है तो नई पद्धति में स्पष्ट है कि वह अधिक आसान होना चाहिये। बौद्धिक विषयों में बहुत कर के अब अधिक ग्रन्थों का सहारा लेना पड़ेगा पर कुछ विषय उन में भी केवल ग्रन्थ के द्वारा नहीं सीखे जा सकते हैं। अर्थशास्त्र में, मनोविज्ञान में, प्रयोग की काफ़ी गुंजाइश है। मैं आशा करता हूं कि आपका सम्मेलन एक पाठ्य क्रम तैयार कर सकेगा। जो देश के लिये हितकर होगा। युनीवर्सिटी कमीशन ने डेनमार्क में के लोक विद्यालयों के सम्बन्ध में बहुत लिखा है और मैंने उस पद्धति की बहुत प्रशंसा सुनी है। यह भी सुना है कि वहां की सारी जनता और देशों के मुकाबले में अधिक शिक्षित है और सारे समाज में सम्पत्ति के सबंध में भी वर्ग वर्ग के बीच अधिक अन्तर नहीं है। मुमकिन है कि उस पद्धति के अध्ययन से आप लोगों को कुछ सहायता मिले। क्योंकि जहां तक मैं समझ सकता हूं बुनियादी तालीम और उस पद्धति में के मौलिक सिद्धान्तों में सामजंस्य है। पर मेरा अध्ययन नहीं है इसलिये निश्चित सम्मति नहीं दे सकता हूं।

आशा है सम्मेलन सफल होगा और जो लोग इस काम में लगे हैं उनको इससे नई स्फूर्ति मिलेगी।

यह संतोष की बात है कि माननीय बद्रीनाथ वर्मा सम्मेलन के सभापति होने जा रहे हैं। उन्होंने इस विषय में आरम्भ से ही दिलचस्पी रखी है और इसके प्रसार में क्रियात्मक रूप से भाग लिया है। उनके नेतृत्व में सम्मेलन का होना इसकी सफलता का सूचक है।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् को सन्देश।

(१७-२-५१)

पारस्परिक आदान प्रदान से देश की सब भाषाओं के साहित्य की उन्नति होगी। आशा है बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् इस ध्येय की प्राप्ति में सहायक होगी। उसकी सफलता के लिये मेरी शुभ कामना है।

बिहार अनुशीलन परिषद् के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में सन्देश ।

(२७-४-५१)

अत्यन्त हर्ष की बात है कि बिहार अनुशीलन परिषद् के तत्वाधान में स्वर्गीय श्री काशीप्रसाद जायसवाल की पुण्य स्मृति में एक अनुशीलन प्रतिष्ठान की स्थापना हो रही है । परिषद् भारतीय इतिहास सम्बन्धी अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य करती रही है, और आशा है कि इस प्रतिष्टान की स्थापना से तो उसके कार्य का महत्व और भी बढ़ जायगा ।

भारतीय इतिहास का अभी अस्पष्ट और धुंधला चित्र ही हम लोगों के सामने है । सम्यक अन्वेषण द्वारा उस को पूरा करना है, और आशा है कि इस कार्य के पूरा करने में श्री जायसवाल जी की स्मृति प्रकाश स्तम्भ के समान परिषद् और अनुष्ठान का पथ ज्योतिर्मय करती रहेगी ।

मेरे विचार मे भारतीय इतिहास का प्रमुख प्रश्न भारतीय आध्यात्मिक बुद्धि या चेतना के निर्माण और विकास का प्रश्न है । क्या मैं आशा करूं कि परिषद् अपने ऐतिहासिक गवेषणों द्वारा इस विकास का चित्र हमारे सामने रखने का प्रयास करेगी ?

परिषद् और श्री काशीप्रसाद जायसवाल प्रतिष्ठान की सफलता मैं हृदय से चाहता हूं ।

बिहार प्रादेशिक पिंजरापोल पटना को सन्देश ।

(२६-५-५१)

मानव जाति के लिये सर्वदा ही भारत में गोधन का अत्यन्त महत्व रहा है और सम्भवतः इसी कारण गाय मां की तरह पूजी जाती रही है । किन्तु उसकी पूजा तभी सार्थक और सच्ची होगी जब उसका लालन-पालन वैज्ञानिक दृष्टि और रीति से किया जायेगा । इस बारे में हमारी गोशालाएं बहुत काम कर सकती हैं और मुझे ऐसी आशा है कि बिहार प्रादेशिक गोशाला पिंजरापोल संघ अपने आगामी पंचवार्षिक-सम्मेलन में सब गो प्रेमियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करेगा और वह पथ दिखायेगा जिस पर चल कर गोशालाएं गौ और देश की सेवा अधिक से अधिक प्रभावी ढंग से कर

सकें। यह स्पष्ट मान लेना चाहिये कि निरी भावुकता से आज की परिस्थितियों में काम नहीं चलेगा। भावुकता के साथ विवेक और वैज्ञानिक जानकारी से भी काम लेना आवश्यक है। इसलिये गोसेवा तभी सार्थक होगी जब वह मनुष्य के लिये भारत में आर्थिक दृष्टि से भी लाभकर हो जाये। यह सम्भव है और यही सभी सच्चे और समझदार गो सेवकों का कर्तव्य है।

भारत स्काउट्स और गाइड्स को सन्देश।

(४-६-५१)

मानव की किसी प्रकार के भेदभाव के बिना सेवा सुश्रुषा करना ही स्काउट का आदर्श है। वर्तमान युग में इस आदर्श की कहीं अधिक उपयोगिता और आवश्यकता है, क्यों कि आज प्रत्येक व्यक्ति और जाति का भाग्य और भविष्य सारे विश्व के अन्य व्यक्तियों और जातियों से बुना हुआ है।

मुझे आशा है कि निखिल विश्व जम्बूरी इस आदर्श को और भी बल प्रदान करेगी। साथ ही मुझे भारतीय स्काउटों से यह भी आशा है कि वे अपने व्यवहार और कार्य प्रणाली में प्रतिक्षण इस बात का ध्यान रखेंगे कि वे भारत के प्रतिनिधि हैं—उस भारत के जिसने निस्पृह सेवा धर्म का आदर्श सहस्त्राब्दियों पूर्व मानव जाति के सामने रखा था, और जो आज भी उसी धर्म के पालन में मानव जाति का कल्याण मानता है।

मेरी शुभ कामना है कि उनकी यात्रा सुखद हो और उन का प्रयोजन सफल हो।

नेत्र सुधार संघ की स्थापना के अवसर पर सन्देश।

(१४-६-५१)

नेत्र सुधार संघ की स्थापना नेत्र पीड़ितों के लिये वरदान के समान होगी। हमारे देश में अज्ञान के कारण या अन्य कारणों से भी काफ़ी गरीब लोगों को आंख के रोग होते हैं और उनको उनकी विशिष्ट वैज्ञानिक

चिकित्सा की वैसी सुविधा साधारण अस्पतालों में नहीं मिल पाती जैसी कि आवश्यक होती है। अतः नेत्र सुधार संघ की स्थापना से यह सम्भव हो सकेगा कि उसके तत्वावधान में चलने वाले नेत्र चिकित्सालयों और उसके द्वारा किये जाने वाले नेत्र रक्षा सम्बन्धी प्रचार से हमारे नेत्र रोगियों और विशेषतया ग्रामीण रोगियों को पर्याप्त लाभ हो। मैं समझता हूं कि इस संघ की स्थापना करने और उसे सफलतापूर्वक चलाने में लगे हुए सब कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं।

लाजपतराय राष्ट्रीय विद्यालय को सन्देश।

(२८-६-५१)

श्री लाजपतराय शिल्पशाला कई वर्षों से अच्छा काम करती रही है। इस सम्बन्ध में देश के नेताओं ने अपने विचार प्रकट किये हैं। अब उसकी उपयोगिता बढ़ाने के लिए और उसे आज की परिस्थिति में अधिक सेवा करने योग्य बनाने के लिये उसमें खेती तथा शिल्प के अलावा उच्च हिन्दी, संस्कृत और हिसाब इत्यादि की शिक्षा का प्रबन्ध करके उसको लाजपतराय राष्ट्रीय विद्यालय के रूप में चलाने का विचार संचालकों ने किया है। यह प्रयत्न शुभ है और इसकी सफलता मैं चाहता हूं।

हजरत अमीर खुसरो के वार्षिक उर्स के अवसर पर संदेश।

(२०-७-५१)

हजरत अमीर खुसरो की जिन्दगी के दो पहलुओं की आज हम सब के लिये अहमियत है। अव्वल तो वे अपनी जिन्दगी में इस बात के लिये बराबर कोशिश करते रहे कि इस मुल्क में लोगों के तहज़ीब और तमद्दुन में ऐसा आपसी मेल जोल हो जाए कि वे एक दूसरे को अपना भाई समझें और एक दूसरे की खुशी, तकलीफ़ में बराबर हिस्सा ले सकें। दोयम्—उनकी जिन्दगी मुहब्बत का एक लबरेज़ प्याला थी। खुदा की मुहब्बत और इन्सान की मुहब्बत उनके दिल में अज़हद थी और वे उनकी सेवा में लगे रहते थे। मेरा ख्याल

है कि अगर उनकी जिन्दगी से हम भी आपसी मेल जोल और मुहब्बत का सबक लें तो हमारी जिन्दगी की बहुत सी मुश्किलात जो हमारे सामने हैं बहुत आसानी से और जल्द दूर हो जायेंगी।

मैं समझता हूं कि आज उनके इस मुक़द्दस उर्स के दिन हम सब लोग इस बात का अहद करें कि हम उन्हीं की तरह अपनी जिन्दगी मुहब्बत और सेवा में गुजारें।

वर्धा सूतिका गृह की निजी इमारत के उद्घाटन के अवसर पर सन्देश।

(८-८-५१)

मुझे इस बात का हर्ष है कि श्री रामकृष्ण पाटिल द्वारा वर्धा-सूतिका गृह की निजी इमारत का उद्घाटन किया जा रहा है। भारत में इस प्रकार के गृहों की अत्यन्त आवश्यकता है, और मुझे पूरा भरोसा है कि वह वर्धा तथा उसके निकट की नारी जाति की पूरी सेवा कर सकेगा।

बिहार महिला संघ को सन्देश।

(२४-८-५१)

नव भारत में महिलाओं का समाज और राज्य में पुरुषों के समान ही स्थान होगा। अतः भारत की और विशेषतया बिहार की महिलाओं का कर्तव्य है कि वह अपने उचित स्थान को हासिल करने और अपने कर्तव्यों के पालन करने के लिये कटिबद्ध हो जायें। उनको बहुत मेहनत से इस कार्य में शीघ्र सफलता ग्रहण करनी है। क्या मैं आशा करूं कि बिहार का महिला सम्मेलन इस बारे में महिलाओं को ठीक २ पथ दिखलायेगा।

मैं सम्मेलन की सफलता के लिये अपनी शुभकामनायें भेजता हूं।

विश्व-मैत्री दिवस के अवसर पर सन्देश।

(१५ ६-५१)

मुझे खुशी है कि स्थानीय कतिपय उत्साही कार्यकर्ताओं के सत्प्रयास के फल-स्वरूप यहां रविवार १६ सितम्बर को विश्व-मैत्री दिवस मनाया जा रहा है। आज के सन्देह एवं अविश्वास के वातावरण में ऐसे प्रयत्नों की ज़रूरत है।

मैं आयोजन की सफलता चाहता हूं।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी को सन्देश।

(२१-६-५१)

मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी ने सदा ही वक्त पड़ने पर दुखियाओं और दीनों की भरपूर सहायता और सेवा की है। हम सब का कर्तव्य है कि इस संस्था के कोष को सदा भरा रखें। क्या मैं आशा करूं कि इस संस्था को अधिकाधिक धन देकर देश के सब धनी लोग इसकी कार्य क्षमता को बढ़ाने में सहायक होंगे और अपने को कृतार्थ करेंगे।

श्री राष्ट्रीय शाला राजकोट को सन्देश।

(२३-६-५१)

चरखा बापू को सब से अधिक प्रिय था क्योंकि उनकी दृष्टि में निस्पृह सेवा का वह सर्वोत्तम प्रतीक था। मुझे हर्ष है कि उनकी स्मृति में सूत कातने और चर्खा चलाने का ८० दिन का पर्व आप मना रहे हैं मेरी सद्कामना है कि आपको इस में पिछले वर्षों से भी अधिक सफलता मिले।

कस्तूरबा ग्राम सेवक संघ को सन्देश।

(२६-६-५१)

भारत में नव जीवन की स्फूर्ति प्रदान करनेके लिये यह आवश्यक है कि उस के ग्रामों में वैसी संस्कृति की लहर दौड़ाई जाये जैसी पूज्य बापू भारत में स्थापित

करना चाहते थे। कस्तूरबा ग्राम सेविकाएं इस सम्बन्ध में ग्राम की नारियों में अच्छा कार्य करती रही हैं। मुझे भरोसा है कि कस्तूरबा ग्राम सेविकाओं का यह शिविर उनको अपने काम को सफलता से चलाने के लिये योग्य तो बनायेगा ही साथ ही उनके मन को ऐसे उत्साह से भर देगा कि वे अपनी सारी शक्ति उसी काम को पूरा करने में सहर्ष लगायेंगी। शिविर की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

गान्धी जयन्ती शिविर नागपुर को सन्देश।

(२६-६-५१)

पूज्य बापू के प्रति सब से सुन्दर श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि रचनात्मक कार्य में लोग अपना समय और शक्ति लगायें। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि अन्य वर्षों के समान ही इस वर्ष भी ८३ दिनों की गान्धी जयन्ती का आयोजन मध्य प्रदेश में किया जा रहा है। शिविर की पूर्ण सफलता के लिये मेरी शुभकामनाएं हैं।

महारोगी सेवामंडल वर्धा को सन्देश।

(२६-६-५१)

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महारोगी सेवा मंडल, वर्धा ने वर्धा तहसील के ३१० गावों में से रोगोन्मूलन की योजना बनाई है और साथ ही इस बात का भी प्रबन्ध किया है कि कार्यकर्ताओं को एक साल तक शिक्षा देकर लेपरासी आरगनाइजर के लिये योग्य बनाया जाये। कहने की बात नहीं कि कुष्ट के समान और कोई बुरा रोग नहीं। उसी रोग से मोर्चा लेने का यह स्तुत्य प्रयत्न हम सब की सहायता के योग्य है। मुझे आशा है कि महारोगी सेवा मंडल को पूरी सहायता प्राप्त होगी। मेरी सद्भावना है कि मंडल अपने कार्य में पूर्णतया सफल हो।

अमृत को सन्देश।

(३०-६-५१)

अमृत का पहला अंक मुझे देखने को मिला। इसके लेख सुन्दर और गम्भीर हैं। पर अमृत का स्वागत मैं केवल इसी के लिये नहीं कर रहा हूं यह श्री अमृतलाल ठक्कर (ठक्कर बापा) की प्रवृत्तियों के चलाने के अभिप्राय से निकाला गया है इससे मैं इसका स्वागत करता हूं। ठक्कर बापा का सारा जीवन दलितों की सेवा में बीता, चाहे वे मजदूर हो, चाहे अछूत कहे जाने वाले ग़रीब, चाहे आदिम जाति के लोग। मरते दम तक उनकी चिन्ता यही रही कि कैसे उनकी सेवा व सहायता की जाये। वृद्धावस्था में भी जितना मानसिक और शारीरिक परिश्रम वह उनकी सेवा के लिये, दिन प्रति दिन किया करते थे वह हट्टे कट्टे नव जवानों को शर्मा देता था। यदि उस लगन, कार्यदक्षता और परिश्रम के प्रवाह में से कुछ बूंद भी अमृत अपने पाठकों तक पहुंचा सके तो सचमुच वह उनके काम देगा।

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद का राजपुरा केन्द्र को सन्देश।

(३-१०-५१)

मैं बहुत दिनों से चाहता था कि राजपुरा में निर्वासितों के बसाने का जो काम हो रहा है उसे जाकर देखूं क्यों कि मेरा उस काम के साथ शुरू से ही सम्बन्ध रहा है। पर आज के पहले मैं यहां नहीं आ सका इसका मुझे खेद है। आकर जो कुछ मैंने देखा उससे मुझे सन्तोष हुआ क्योंकि मैं ने देखा कि जब से मेरा सम्बन्ध छूटा और आज के बीच के काल में काफी प्रगति हुई है। निर्वासितों को घर दे देना ही काफी नहीं है। उनको कुछ ऐसे धन्धे भी मिलने चाहिये जिनसे वह अपना गुजारा कर सकें। और अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसकी खास दिक्कत राजपुरा में महसूस की जाती थी क्यों कि यहां आसपास में कोई ऐसे बड़े कारखाने नहीं और न कोई ऐसे धन्धे जिन्हें वह अपना सकते। इसलिये जो काम सिखाने का प्रयत्न किया जा रहा है वह और भी प्रशसंनीय है। मैं आशा करता हूं कि इसमें पूरी सफलता मिलेगी।

मज़दूर जगत को सन्देश।

(११-१०-५१)

भारत की सर्व प्रधान समस्या आर्थिक उत्पादन की अभिवृद्धि है। इस समस्या के हल करने में भारतीय श्रमिकों का बड़ा भारी हाथ होगा। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि भारतीय श्रमिकों की दशा का यथोचित अध्ययन होता रहे ताकि जनता को यह ज्ञात रहे कि उनके लिए कैसी और कौन सी सुविधायें प्राप्त करायी जायें ताकि वे देश की आर्थिक समस्या को सुलझाने में पूरी तरह से हाथ बटा सकें। और साथ ही भारतीय श्रमिकों को भी यह ज्ञात होता रहे कि किस रीति से और किस क्षेत्र में अंशदान करके वे अपने कर्तव्य को पूरा कर सकते हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि "लेबर गज़ट" का हिन्दी संस्करण निकल रहा है। यह तो उचित ही हो रहा है। क्योंकि अपनी देशीय भाषाओं के द्वारा ही भारतीय श्रमिकों को उनके कर्तव्यों से परिचित कराया जा सकता है। और भारतीय जनता से उनकी दशा का वर्णन किया जा सकता है। मेरी सद्कामना है कि श्रम सचिवालय को इस कार्य में पूरी सफलता मिले।

राजस्थान विश्वविद्यालय के चौथे समावर्तन समारोह के अवसर पर सन्देश।

(५-११-५१)

यह खुशी की बात है कि राजस्थान विश्वविद्यालय अपना चतुर्थ दीक्षान्त समारोह कर रहा है। इन चार वर्षों में ही विश्वविद्यालय ने पर्याप्त उन्नति की है। मेरा विचार है कि राजस्थान विश्वविद्यालय राजस्थान की समस्याओं के अध्ययन की ओर कार्यशील है। राजस्थान की आर्थिक समस्याएं काफी महत्वपूर्ण हैं और उनके हल करने के बारे में विश्वविद्यालय पर्याप्त बुनियादी काम कर सकता है। राजस्थान के इतिहास के पूनर्निर्माण और उसके आर्थिक जीवन के पुनर्निर्माण में विश्वविद्यालय पर्याप्त भाग लेने में पूर्णतया सफल हो ऐसी मेरी शुभकामना है।

बच्चों की बिरादरी दिल्ली को सन्देश।

(१५-११-५१)

प्यारे बच्चो यह जानकर मुझे खुशी हुई कि तुम लोग बच्चों की कान्फ्रेन्स करने जा रहे हो। यह ज़माना कान्फ्रेन्सों का है। मगर मैं उम्मीद करता हूं कि तुम्हारी कान्फ्रेन्स सिर्फ तजवीजें पास कर के न खुश होगी बल्कि उन पर अमल करेगी और तजवीजें भी ऐसी होंगी जिन पर तुम अमल कर सकते हो। कान्फ्रेंस की सफलता के लिये मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

बनस्थली बालिका विद्यालय को सन्देश।

(१८-११-५१)

मुझे इस बात से हर्ष है कि बनस्थली विद्यापीठ अपना १६वां वार्षिकोत्सव आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में मनाने जा रही है। बनस्थली विद्यापीठ बालिकाओं की अच्छी खासी सेवा करती रही है और मुझे आशा है कि अपनी पिछली सफलताओं से अनुप्राणित होकर वह भविष्य में और भी अधिक सफलता पूर्वक शिक्षा क्षेत्रों में कार्य करती रहेगी। उसके प्रति मेरी हार्दिक शुभकामना है।

दून स्कूल के विद्यार्थियों को पत्र।

(२७-११-५१)

प्यारे बच्चो,

मैंने तुम्हारे हस्तलिखित पत्र को देखा। देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह प्रसन्नता पत्र के सुन्दर चित्रों से सजे जाने और अच्छे पुष्ट अक्षरों के लिखे जाने से जितनी हुई उतनी ही उसके विषयों से हुई जिस पर वह लेख लिखे गये हैं। मैंने सोचा कि इस पत्र का तुम्हारे स्कूल के संग्रहालय में रहना अधिक उपयोगी होगा। इसलिये मैंने इसे अपने धन्यवाद सूचक पत्र के साथ वापस करने का निश्चय किया। तुम यदि उचित समझो तो मेरे धन्यवाद को स्वीकार करो। और इस खत को कहीं चिपका दो।

हिन्दी शिक्षा परिषद् कलकत्ता के समावर्तन समारोह के अवसर पर सन्देश ।

(६-१२-५१)

अहिन्दी भाषा भाषी लोगों में राजभाषा हिन्दी का प्रसार अत्यन्त आवश्यक है और जो संस्थाएं इस कार्य को कर रही हैं वे सराहनीय हैं। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हिन्दी शिक्षा परिषद् की ओर से बंगाल के सरकारी दफ़तरों में निःशुल्क हिन्दी का प्रचार किया जा रहा है। और शिक्षा के उपरान्त यह परिषद् लोगों को दीक्षा भी देता है।

मेरी शुभकामना है कि परिषद् अपने इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करे।

१९५२

ठक्कर बापा की वार्षिक जयन्ती के अवसर पर सन्देश ।

(१३-१-५२)

ठक्कर बापा के जीवन का केवल एक मात्र आदर्श था। वह था दलितों की सेवा और सुधार।

उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का एक ही मार्ग है और वह है उनके जीवन के व्रत को अपनाना और उसको सफल करना। मुझे आशा है कि देश के अनेक युवक युवती इस मार्ग को अपनाकर देश के दलितों के प्रति अन्याय और असमता को मिटा देंगे। जो इस शुभ कार्य में लगे हैं उनसे मेरा अनुरोध है कि वे उसे और भी अधिक उत्साह पूर्वक करते रहेंगे।

संस्कृति प्रदर्शनी प्रयाग को सन्देश।

(८-२-५२)

मुझे यह सुनकर प्रसन्नता है कि प्रयाग में वैदिक मेला का आयोजन किया जा रहा है जिसमें एक सांस्कृतिक प्रदर्शनी भी होगी। प्रयाग भारत में प्राचीन काल से तीर्थराज माना गया है और आधुनिक काल में भी हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई में उसका अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग रहा है। इस प्रकार की प्रदर्शनी में इस सारे इतिहास को यदि दिखलाया जा सकेगा तो यह एक बड़ी शिक्षाप्रद प्रदर्शनी होगी। मैं इसकी सफलता चाहता हूं।

भारतीय संस्कृति सम्मेलन दिल्ली को सन्देश।

(२५-२-५२)

मुझे इस बात का हर्ष है कि भारतीय संस्कृति के स्वरूप के निर्णय के सम्बन्ध में विद्वानों और मनीषियों का ध्यान आकृष्ट हो रहा है। इस सम्बन्ध में यह आवश्यक है कि किसी प्रकार के संकुचित दृष्टिकोण से विचार न किया जाये। भारतीय संस्कृति ऐसी धारा के समान है जो गत अनेक शताब्दियों से बहती रही है और जिसमें विभिन्न जातियों के विचारों और वेदनाओं की छोटी मोटी धारायें आकर मिलीं और इसको अधिक शक्तिशाली और विशाल बनाया। एक प्रकार से यह सभ्य जगत की लगभग सभी जातियों की मिली जुली देन है और अपने इसी गुण के कारण संसार की सब जातियों में विशिष्ट है और अपनी इसी विशिष्टता के कारण संसार में न केवल अपना अपूर्व स्थान रखती है वरन् संसार के भावी कल्याण के लिये मुख्य प्रेरणा सिद्ध हो सकेगी।

क्या मैं आशा करूं कि भारतीय संस्कृति सम्मेलन भारतीय संस्कृति की इस विशिष्टता पर ध्यान रख कर उसका ठीक स्वरूप निर्णय करेगा? सम्मेलन की सफलता के लिये मेरी शुभकामना है।

राजस्थान दिवस के लिये सन्देश ।

(१६-३-५२)

प्रिय श्री टीकाराम जी,

आपका १६ मार्च का पत्र मिला। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप लोग ३० मार्च को राजस्थान दिवस मनाने जा रहे हैं। इसी दिन आज से तीन वर्ष पहले सरदार पटेल के हाथ इस राज्य का उद्घाटन हुआ था। राजस्थान कई राज्यों को मिलाकर बनाया गया है और आज भारत के राज्यों में उसका एक स्थान है। यह अब आप सब का काम है कि इस राज्य को आप उसके प्राचीन इतिहास के योग्य फिर से बनादें जिसमें वह भारत में अन्य राज्यों के साथ बराबरी का स्थान प्राप्त कर ले। पहला काम तो यह है कि जन साधारण को यह महसूस होना चाहिये कि अब राज्याधिकार जनता के हाथों में है और उनके ही द्वारा नियुक्त मन्त्री शासन कार्य चलायेंगे। अभी जो चुनाव समाप्त हुआ है उससे उनको अपने अधिकार का पता तो लग गया होगा ही। अब जो लोग चुने गये हैं उनको अपनी सेवा द्वारा यह प्रमाणित करना है कि इससे उनको लाभ पहुंचा है। आपस की फूट और दलबन्दियों से बहुत जगहों में काम बिगड़ जाता है। मैं आशा करता हूं कि राजस्थान के सभी लोग सब की भलाई की भावना को लेकर मिल जुल कर काम करेंगे और सर्वतोन्मुखी उन्नति इस राज्य की देखने में आयेगी। मैं आपके आयोजन की सराहना करता हूं और उसकी सफलता चाहता हूं।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के लिये सन्देश ।

(२४-३-५२)

राष्ट्रभाषा हिन्दी को हर दृष्टि से समुन्नत करना और उसे संसार की सर्वश्रेष्ठ भाषाओं में से एक बना देना हर देश प्रेमी का कर्तव्य है। मुझे राष्ट्रभाषा परिषद् बिहार से भी यही अपेक्षा है और मैं आशा करता हूं कि वह अपने अब तक के कार्य से प्रेरणा प्राप्त करके अगले वर्ष में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पूरी लगन से कार्य करेगा। उसकी सफलता के लिये मेरी शुभकामना है।

वशाली संघ के अष्टम महोत्सव के लिये सन्देश।

(३०-३-५२)

प्राचीन गणतान्त्रिक प्रणाली के सम्बन्ध में अभी पर्याप्त गवेषणा की आवश्यकता है। वैशाली संघ इस बारे में कार्य करता रहा है। मुझे आशा है कि अपने पिछले जीवन के कार्य से प्रेरणा पाकर आगामी वर्ष में वह और भी उत्साह से कार्य करेगा। इसकी सफलता के लिये मेरी पूरी सद्कामना है।

तामिल संघम देहली को सन्देश।

(२-४-५२)

भारत की संस्कृति में तामिल लोगों की अच्छी खासी देन है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि तामिल संग्रम, नई दिल्ली तामिल भाइयों की उस परम्परा को चला रहा है और साथ ही उन्हें भारत की राष्ट्रभाषा।हिन्दी से भी परिचित करा रहा है। उस के इस प्रयास की सफलता के लिये मेरी पूरी सद्कामना है।

प्रवासी भारतवासियों के नाम सन्देश।

(८-४-५२)

श्री भवानी दयाल सन्यासी का जन्म दक्षिण अफ्रीका में हुआ था। वहां के प्रवासी भारतीओं की सेवा के लिये उन्हों ने अपने जीवन को समर्पित कर दिया और महात्मा जी के चलाये आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया। यहां आकर भी वह अपनी मृत्यु पर्यन्त प्रवासी भारतीयों के दुःख निवारण के लिये बराबर आन्दोलन करते रहे और देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में तो उन्होंने भाग लिया ही। उनका जीवन सेवा और त्याग का जीवन था। जिन अन्याओं के विरुद्ध वह बराबर युद्ध करते रहे, उनमें से कुछ तो आज भी हैं और उनकी स्मृति का यह तकाज़ा है कि सब लोग उन अत्याचारों को मिटाने के लिये प्रयत्नशील रहें।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा को सन्देश।

(२५-४-५२)

भारतीय विधान ने निश्चय किया है कि भारतीय संघ की राज्य भाषा हिन्दी हो। अतः जिन प्रदेशों की भाषा हिन्दी नहीं है उनके विद्यार्थियों और जनता के निजी हित में यह अत्यन्त आवश्यक है कि उन्हें हिन्दी का ज्ञान हो। हिन्दी के द्वारा न केवल वे अपने अपने प्रदेशों से बाहर के अन्य भारतीय प्रदेशों के जीवन के हर क्षेत्र में सफलता से प्रवेश कर सकेंगे वरन् संघ सेवाओं में और हिन्दी भाषी राज्यों की सेवाओं में भी प्रवेश करने की भी उन्हें पूरी सुविधा होगी। अतः मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, जो अहिन्दी भाषा भाषी प्रदेशों में अनेक वर्षों से प्रभावी कार्य करती रही है, उस का काम और फैलता जा रहा है और अब वह अपना सत्रहवां पदवीदान समारम्भ कर रही है। सभा जो कर रही है उसके अतिरिक्त यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है कि मद्रास राज्य में प्रायः सभी शिक्षालयों में हिन्दी सिखाने पढ़ाने के लिये शिक्षक नियुक्त किये गये हैं और स्वेच्छा से विद्यार्थी प्रायः सब के सब हिन्दी सीख रहे हैं। यह हिन्दी प्रचार सभा के बहुकालिक और बहुत बिस्तृत सेवा का फल है। पदवी पाने वाले भाई बहिनों को मैं बधाई देता हूं और मेरी उनसे यह आशा है कि वे अपनी प्रतिभा से न केवल अपने प्रादेशिक भाईयों को ही लाभ पहुंचायेंगे वरन् हिन्दी जगत को भी समृद्ध बनायेंगे और उसमें वैसा ही प्रमुख स्थान प्राप्त कर लेंगे जैसा कि जीवन के अनेक क्षेत्रों में उन्होंने पा रखा है।

उनकी और सभा की पूर्ण सफलता के लिये मैं अपनी सद्कामना भेजता हूं।